रेगिस्तान में झील

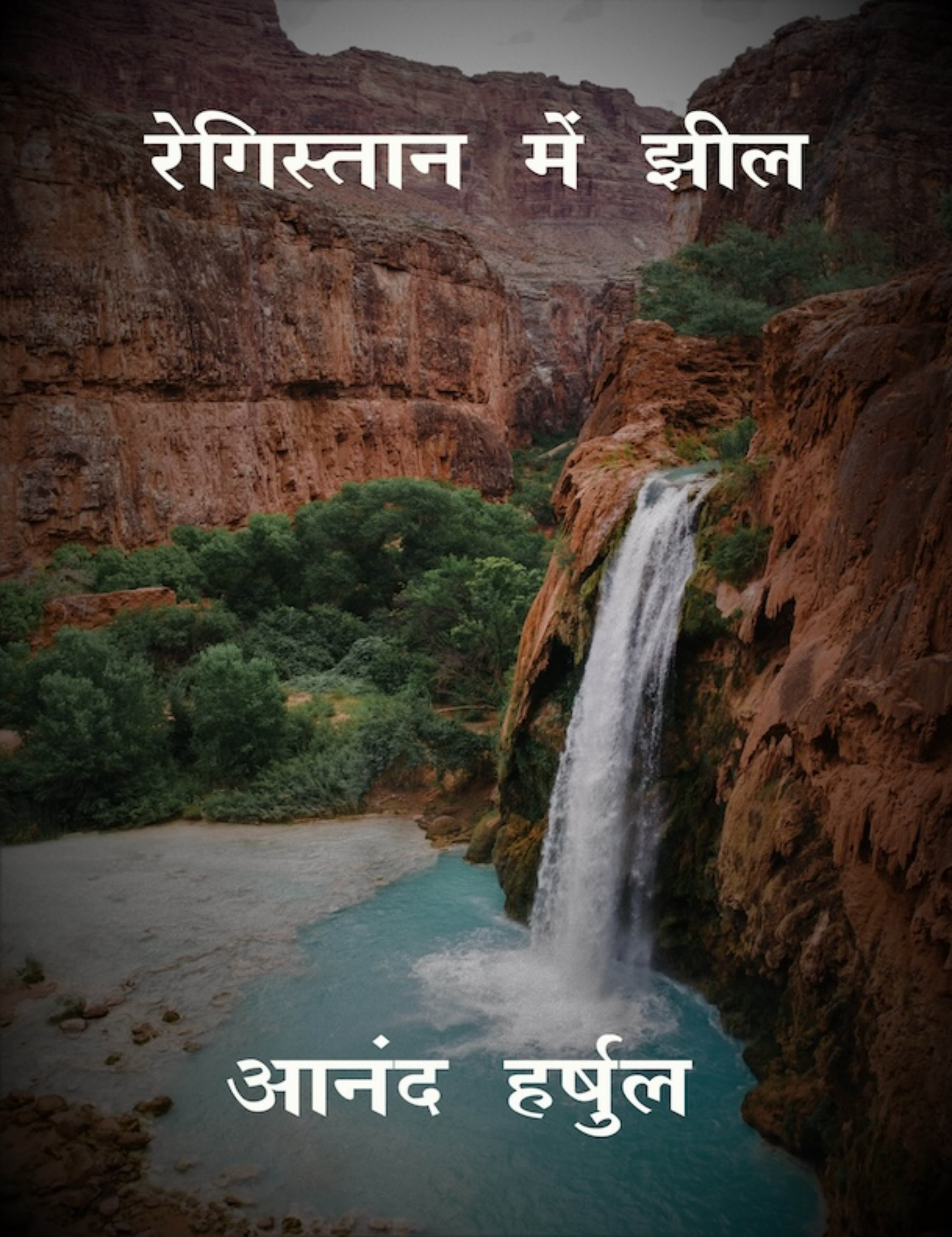

आनंद हर्षुल

रेगिस्तान में झील

आनंद हर्षुल

आनंद हर्षुल

23 जनवरी 1959 को छत्तीसढ़ के एक गाँव बगिया (रायगढ) में जन्म। कानून तथा पत्रकारिता में स्तानक।

उनका पहला कहानी संग्रह 'बैठे हुए हाथी के भीतर लड़का' 1997 में प्रकाशित हुआ। उसके बाद 'पृथ्वी को चंद्रमा' 2003 में, 'अधखाया फल' 2009 तथा 'रेगिस्तान में झील' 2014, उनकी कहानियों का चौथा संग्रह है-- जिसमें उनकी प्रारंभ से 2001 तक की कहानियाँ संकलित हैं। 'बैठे हुए हाथी के भीतर लड़का' के लिए मध्य प्रदेष साहित्य परिषद के 'सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार' (1997) 'पृथ्वी को चन्द्रमा' के लिए 'विजय वर्मा अखिल भारतीय कथा सम्मान' (2003) एवं समग्र लेखन के लिए 'वनमाली कथा सम्मान' (2014) से सम्मानित। कहानियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद।

रेगिस्तान में झील

रेत के टीले इसलिये सुनहरे दमकते होते है कि उनके भीतर सूर्य होते हैं। रेत के टीलों की खुदाई करो -- वहाँ सैकड़ों सूर्य होंगे।

पत्नी खुश थी। मैं खुश था। बिटिया की ताली थी--नन्ही बिखेरती हुई। हम सूरज को रेत में डूबता देखना चाहते थे। अभी शाम नहीं हुई थी। हमने सूरज को डूबने से पहले पा लिया था। वह आकाश में था--बिटिया के फैले हुए हाथों के घेरे में।

ऊँट पर सवार उस लड़के ने मुझे सबसे पहले छुआ--'साहब मेरे ऊँट पर बैठना'.... वह मुश्किल से दस या बारह साल का था और ऊँट की पीठ पर उसका बैठना कुछ अजीब-सा था। उसकी आवाज सुनकर मैं चौंका और मुझे हंसी आई। मैं इतने नन्हें ऊँटवाले पर भरोसा नहीं कर सकता था, इससे पहले मैं कभी ऊँट पर नहीं बैठा था।

ऊँट के पास सीधे-साधे आदमी की तरह का चेहरा था जो भय नहीं, जिज्ञासा जगा रहा था। इस दुनिया में सीधे-साधे आदमी से कोई नहीं डरता। अलबत्ता हँसता है, चाहे हंसने की कोई खास वजह न भी हो।

बिटिया की आँखें चमक रही थीं। उसने ऊँट पहली बार देखा था।

ये क्या है? उसने पूछा।

मैंने कहा, 'ऊंट'...

पत्नी ने कहा 'कैमल' ....

बिटिया हर वस्तु दो नामों के साथ चल रही है। पिता का नाम पूछने पर वह कमल... लोटस तिवारी कहती है और मुस्कुराती है। बिटिया की उम्र दो साल पांच माह है और वह इतनी समठझदार है कि वह फूल को